हमारे समय के बच्चे

ये बच्चे उतने बच्चे नहीं
कि इनमें कभी-कभी ढूंढ़ सकें हम अपना बचपन

इनकी उम्र तो कभी-कभी इनकी असल उम्र से भी
कुछ ज्यादा ही लगती है
कभी-कभी तो हमसे भी कुछ ज्यादा
लेकिन नई चीजों के बारे में ये हमसे बहुत ज्यादा जानते हैं
हम जिन तकनीकी उपकरणों के सामने पहुंचते ही
अचकचा कर ठिठक-से जाते हैं कुछ पल
ये बिना किसी हिचक के शुरू कर देते हैं दबाना उनके बटन
न कोई घबराहट न गलती हो जाने की कोई आशंका
विश्वास से भरे हैं इनके चेहरे

इन्हें गल्तियों से बाहर निकलने के सारे रास्ते पता हैं
और जिन रास्तों की इन्हें खबर नहीं उन्हें खोज लेंगे ये
तकनीकों का सारा रहस्य ये जानते हैं
इनकी जानकारियां हमसे बहुत ज्यादा हैं

इनकी आंखों में सपनों से ज्यादा महत्वाकांक्षाएं हैं
सफलता के सारे गुर इनकी निगाह में हैं
इनमें बैचेनी नहीं थोड़ी हड़बड़ी है
और बहुत जल्दी है इन्हें
इन्हें तेज गतियां चाहिएं और बहुत तेज रोशनियां
बहुत तेज है इनके संगीत की लय

इनके लिए तारीखबदर हो चुकी हैं हमारी सारी जानकारियां
हमारी हिचक और हमारा धीमापन
कभी-कभी अजीब-सी झुंझलाहट से भर देता है इन्हें
तब अचानक ये कहते हैं :
ओह ! आप इतना भी नहीं जानते ?
जानकारियों के दर्प की एक खनक सुनाई पड़ती है तब
इनकी आवाज में

यह समय सूचनाओं का समय है
सूचनाओं में तब्दील हो रहा है ज्ञान
यहां तक कि सच भी अब सिर्फ एक सूचना है

इनकी दिलचस्पी तेजी से खत्म हो रही है
समाज, राजनीति या साहित्य जैसे विषयों में
हालांकि जरूरत पड़ने पर इन विषयों को भी
खोज लेते हैं ये इंटरनेट पर उपलब्ध खिड़कियों में
उन्हें लगता है उनकी उंगलियों की पोरों से खुल सकती हैं
दुनिया की तमाम खिड़कियां

कभी-कभी कुछ और ढूंढ़ते हुए अचानक हाथ लग जाती है
जब राजनीति या साहित्य की कोई अनहोनी जानकारी
तो अपने कमरे से ही आवाज लगाते हैं ये हमें
कहते तो नहीं हैं पर कहना उनके अनकहे में
सुनाई पड़ता है अकसर
लो यह रही तुम्हारी दुनिया
हमारी उंगलियों पर नाचते हैं अब
इस सदी की सारी जानकारियों के जिन्न

इनकी भाषा बदल चुकी है
बदल चुका है इनका पूरा वाक्य विन्यास
अब इनके साथ मिलकर स्वर्ग की मीनार बनाना सम्भव नहीं
ठहर कर सोचना और पीछे मुड़कर देखना
इनकी बनक में नहीं है

इतने आक्रामक आकर्षक और बेआवाज हैं इनके जूते
कि किसी स्वप्न के उनके नीचे कुचल जाने की भी
कोई आवाज सुनाई नहीं देगी कभी

हमारे समय की इस भयावह फैंटेसी में
किसी अदृश्य दैत्य की उंगली थामे जाते हुए लगते हैं कभी-कभी
हमारे समय के ये बच्चे ! ◆

राजेश जोशी